संस्कृत के प्रोत्साहन हेतू पाठ्यक्रमों में एकरूपता की आवश्यकता

संस्कृत के उत्थान हेतु स्नातकोत्तर स्तर पर संस्कृत माध्यम ही हो– प्रोफेसर बृजकिशोर कुठियाला

पंचकूला 11 अप्रैल – संस्कृत के उत्थान के लिए आवश्यक है की विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रमों में एकरूपता हो । साथ ही साथ गुरुकुल पद्धति के पाठ्यक्रम एवं विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में ज्यादा से ज्यादा समानता होनी चाहिए। उपरोक्त विचार आज हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के चेयरमैन प्रोफेसर बृजकिशोर कुठियाला ने परिषद और संस्कृत भारती की संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए प्रकट किए ।

पंचकूला में परिषद के कार्यालय में यह आवश्यक बैठक संस्कृत को प्रोत्साहन देने हेतु रखी गई थी। जिसमें संस्कृत भारती के विद्वानों ने अनेक सुझाव प्रदान किए । बैठक के दौरान मुख्य रूप से इस बात पर विचार किया गया कि विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम और हमारे यहां गुरुकुल पद्धति में जो पाठ्यक्रम पढ़या जाता है, उसमें अधिकतम समानता होनी चाहिए। ताकि संस्कृत पढ़ने वाले लोगों को रोजगार के समय किसी भी समस्या का सामना ना करना पड़े। बैठक के दौरान यह निर्णय लिया गया कि पड़ोसी राज्यों के संस्कृ त शिक्षा का अध्ययन किया जाएगा तथा कमेटी के माध्यम से संस्कृत शिक्षा पर एक एक रिपोर्ट तैयार की जाएगी। जिससे वहां संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए किए गए प्रयासों को हरियाणा में भी लागू किया जा सके। बैठक में इस बात पर भी विचार हुआ कि संस्कृत को तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाने की प्रक्रिया आरंभ हुई है जिस पर अभी निर्णय सरकार को लेना है।

संस्कृत जीविका जीविकोपार्जन में सहायक बने इसके लिए प्रयास करने की आवश्यकता है संस्कृत विषय के साथ– साथ अन्य विषय भी पढ़ाए जाए ताकि अन्य विषय के आधार पर भी रोजगार के साधन उपलब्ध हो सके। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत संस्कृत को बढ़ावा मिले इसके लिए प्रयास करना तथा ऐसे समर्पित लोग तैयार करना जो संस्कृत के उत्थान के लिए कार्य करें । इसके लिए हरियाणा के कुछ चुनिंदा कॉलेजों की पहचान करना जहां पर संस्कृत विषय को पढ़ाया जा सके। परिषद् के अध्यक्ष प्रोफेसर कुठियाला ने जानकारी दी कि विज्ञान, कलां,वाणिज्य या अन्य विषयो में पीएचडी करने वाले शोद्यार्थियो को परिषद् फैलोशिप प्रधान करेगी जो संस्कृत सीखने और अपने थीसिस मे संस्कृत ग्रन्थों पर एक अध्याय शामिल करेगा।

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए संस्कृत को रोजगारपरक बनाना पड़ेगा इसके लिए नए सिरे से पाठ्यक्रम एवं ऐसी नीतियों का निर्माण करना पड़ेगा जिससे विद्यार्थी संस्कृत भाषा को कैरियर के रूप में अपना सके।

इस बैठक में परिषद के चेयरमैन प्रोफेसर बृजकिशोर कुठियाला ,परिषद् के वाइस चेयरमैन प्रोफ़ेसर केसी शर्मा, संस्कृत भारती हरियाणा के अध्यक्ष डॉक्टर सोमेश्वर दत्त तथा डॉक्टर जोगिंदर सिंह नारायणगढ़ से मुख्य रुप से उपस्थित थे।